राजस्थान सामान्य ज्ञान

लोक – वाद्य (TRICK)

कला व संस्कृति

हस्तलिखित नोटस

BY AADARSH KUMAWAT

Rajasthan GK

5000 प्रश्न

टेस्ट देकर पढें और तैयारी को नई दिशा दें

टॉप 1000 प्रश्न

ई - बुक सामान्य ज्ञान

डाउनलोड करलो

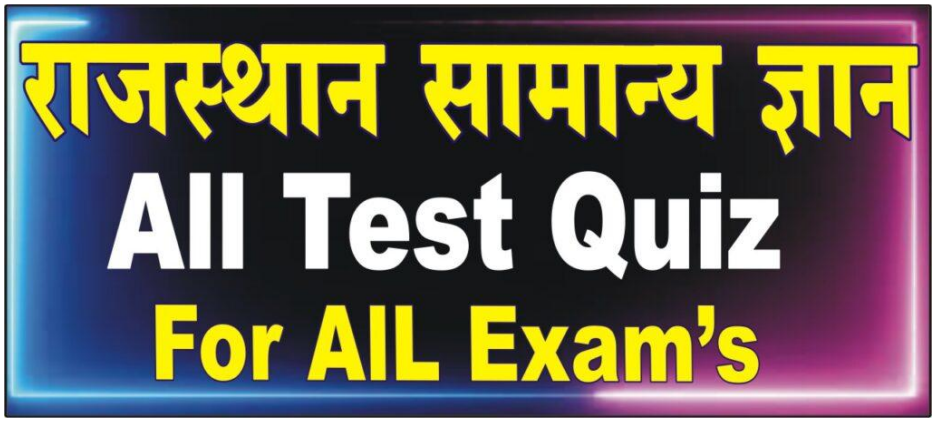

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's

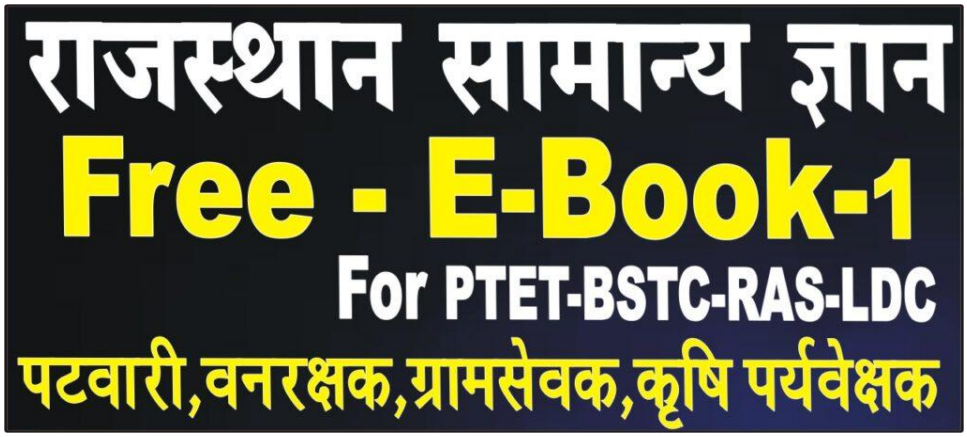

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

सम्पूर्ण नोट्स PDF
विषयवार ई–बुक
सभी PDF यहां से डाउनलोड करें

सामान्य विज्ञान
500 - Questions
PDF डाउनलोड

Date
Page

राजस्थान के लोक वाद्य =

=)) राजस्थान में उपयोग में लिए जाने वाले वाद्य निम्न 4 प्रकार से है जैसे।

(1) तत वाद्य (2) सुषिर वाद्य
(3) अवनद्ध या ताल वाद्य (4) घन वाद्य

=> तत वाद्य = जिन वाद्यों में तारों के द्वारा स्वरों की उत्पत्ति होती है अर्थात तार से बने वाद्य-तत, तन्तु इनमें से जिन्हे गज की सहायता से बजाते है। वे वितत वाद्य होते जैसे इसराज व सांरगी।

तत वाद्य की हमारी ट्रिक ↓
= इसा सुरज सु रगुतभ चिकारा दु।

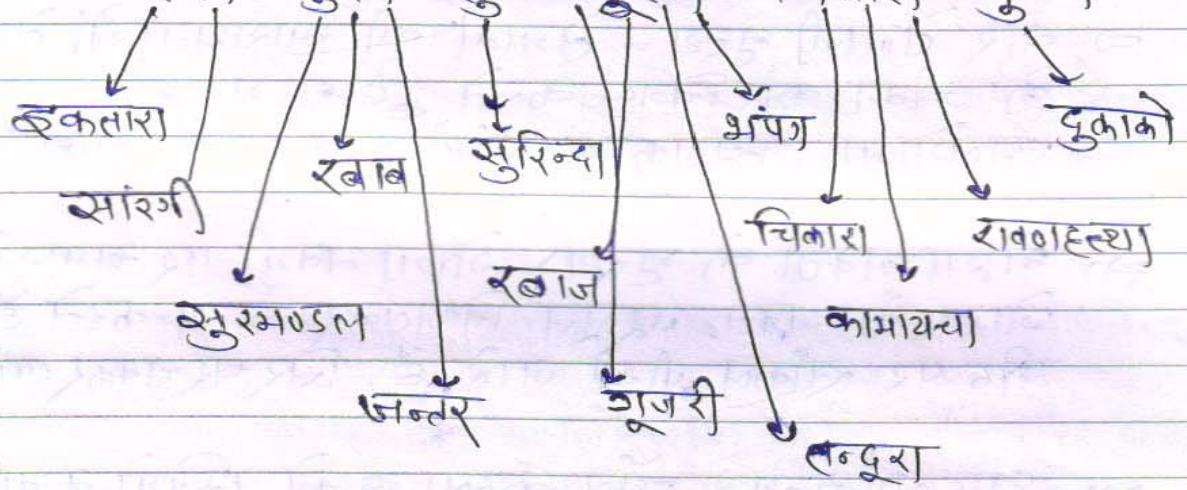

~~(1) इकतारा~~ =)

(1) => सांरगी = तत वाद्यो में सर्वश्रेष्ठ, सागवान की लकडी की बनी, वादन - गज से, लंगा गायिकी सांरगी का उपयोग लेते है। तार बकरे की आन्त और गज में घोडे की पूछ के बाल बंधे होते है

(2) => इकतारा = इसे आदि वाद्य माना जाता है, नारद जी जोडा गया, साधु भजन मडली में बजाते है।

⇒ (3) रावणहत्था = राज्य का प्रचलित एवं सबसे प्राचीन। गज द्वारा बजाया जाता है, गज में घुंघरू बंधे होते है। रावणहत्था पाबूजी, डूंगजी-जवाहरजी के भोपे बजाते है।

(4) ⇒ जन्तर = वीणा का प्रारम्भिक रूप, मुख्य रूप से प्रयोग बगड़ावतों की कथा कहने वाले गूजर भोपे करते है।

⇒ (5) कामायचा = सारंगी के समान, मांगणियार जाति के उपयोग मे नाथपंथी साधु भी भर्तृहरि, गोपीचन्द की कथा कामायचा से गाते। कामायचा एक ईरानी वाद्य यंत्र भी है।

= (6) भपंग - डमरू के समान, अलवर जिले के जोगी भपंग वाद्य यंत्र के साथ पाण्डुन का कड़ा, राजा भर्तृहरि भगत पूरणमल, हीर रांझा, एवं गोगापीर की गाथाएं गाते है।

(7) = तन्दूरा / तम्बूरा = (वेणो) = चार तार होते है। कामड़ जाति अंगुलियों में मिजराब पहनकर अधिक बजाते है।

(8) रवाब = अलवर व टोंक क्षेत्र में, मेवो के भाटों का प्रमुख वाद्य

(9) रबाज = कामायचे की तरह होता है, नाखूनो से बजाया जाता मेवाड़ के रावल व भाट जाति रम्मत लोकनाट्य में बजाते है पाबूजी की गाथा गाने वाले नायक या भील जाति के लोगों द्वारा भी यह बजाया जाता है।

(10) चिकारा = कैर की लकड़ी से बना, एक सिरा प्याले का आकार मुख्यतः अलवर-भरतपुर जोगियों द्वारा कथाओं पर बजाया।

(11) गूजरी = रावणहत्था के प्रकार का छोटा, इसकी गज अर्द्धचन्द्राकार होती है।

Neel Kamal
Date ____
Page ____

(12) सुरिन्दा = लंगा जाति द्वारा, रोहिड़े की लकड़ी का बना होता

(13) दुकाको = भील समुदाय द्वारा दीपावली पर मुख्यत: बजाया जाता है

(14) सुरमंडल = डेढ़ ढाई फुट लम्बा - पश्चिमी राजस्थान में बजाते है

= सुषिर वाद्य =

जो वाद्य फूंक कर बजाए जाते है, निम्न प्रकार २

सुषिर वाद्य की हमारी ट्रिक।

→ पुशबा सु मोम [को] भूक सु मुन बाअसना, सीसी

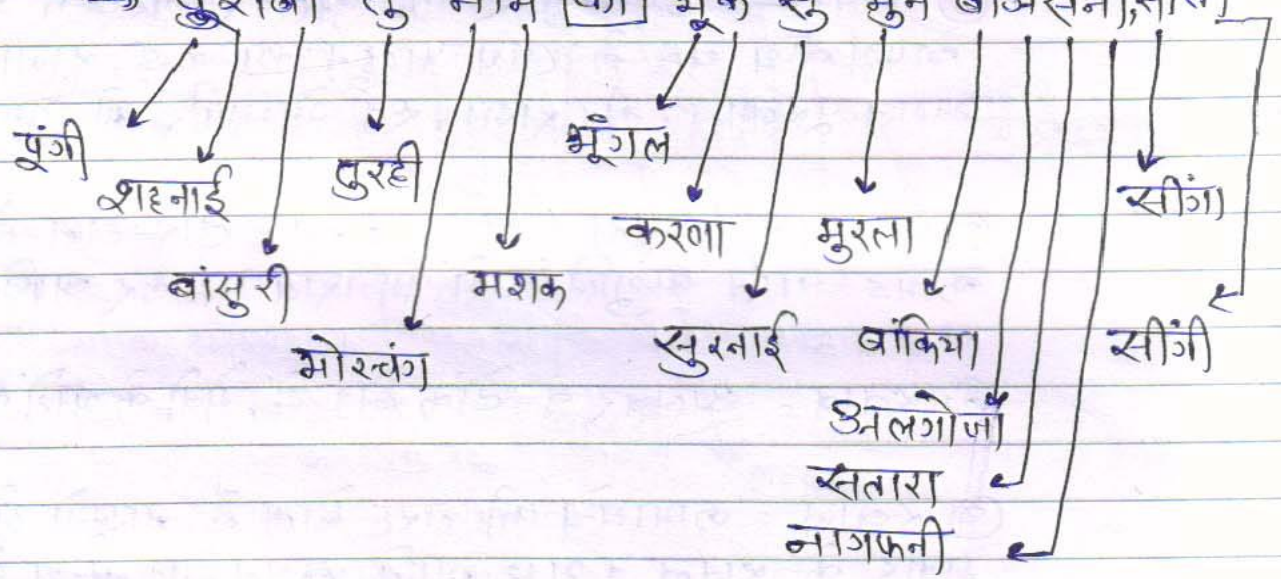

- पूंगी
- शहनाई
- बांसुरी
- सुरही
- मोरचंग
- मशक
- भूंगल
- करणा
- सुरनाई
- मुरला
- बांकिया
- अलगोजा
- सतारा
- नागफनी
- सींगा
- सींगी

→ (1) बांसुरी = पोली नली में स्वरों के लिए सात छेद बनाए जाते है

२ (2) अलगोजा = नकसांसी से बजता है, मीणा आदिवासियों में प्रचलन
इसमें चार छेदों वाली बांसुरी होती है। राज्य वाद्य यंत्र है।

२ (3) शहनाई - सुषिर वाद्यों में सर्वश्रेष्ठ, सुरीला, मांगलिक
आकार, चिलम के समान, इसमें 8 छेद होते है।
शीशम व सागवान की लकड़ी से बना होता है।
बिस्मिल्ला खां प्रमुख शहनाई वादक थे।

⇒ पूंगी -(बीन) - यह छोटी लौकी के तुम्बे की बनी होती। यह भी नकसांसी से बजाई जाती है।
सांप को मोहित करने की अद्भुत शक्ति एवं कालबेलियों में अत्याधिक उपयोग,

⇒ मशक : यह बकरी के चमडे की बनी होती है, इसकी आवाज पूंगी की तरह ही होती है, नकसांसी की सहायता से भेरूजी के भोपे

⇒ बांकियां - पीतल का बिगुल जैसा, सरगडो का खानदानी वाद्य साथ में ढोल-थाली भी बजाई जाती है।

⇒ भूंगल (रणभेरी) - मेवाड के भवाइयों का वाद्य है, जो गाँव में खेल शुरु करने से पहले गांव को एकत्रित करने के लिए बजाते बिगुल की भांति ये भी रण का वाद्य यंत्र रहा।

⇒ सतारा = अलगोजा, बांसुरी और शहनाई का समन्वित वाद्य। जैसलमेर व बाड़मेर में गडरिए मेघवाल और मुस्लिम बजाते है। इसमें दो बांसुरियां होती है जिन्हें फूंक कर बजाया जाता है।

⇒ नड़ : मरु प्रदेश के इलाके का अत्यंत दुर्लभ साज है। कगोर वृक्ष की 1 मीटर लकड़ी से बना होता है। माता या भैरव का गुणगान हेतु भोपे एवं लंगा गायक व ऊंटो की रेवड़ वाले ओठारियों द्वारा प्रयुक्त लिया जाता है।

⇒ मोरचंग : लोहे से बना वाद्य होठो के बीच में रखकर बजाते हैं रेगिस्तानी क्षेत्र में प्रचलित है।

⇒ करणा : पीतल का 7-8 फिट लम्बा नोकदार वाद्य है, संकडे मुंह पर एक छेद, जिसमे सुरनाई जैसी एक नली होती है। प्राचीन काल में रणक्षेत्र व राज्य दरबारो में प्रयुक्त किया जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम **website** व **youtube** ज्वाइन करने के लए आइकॉन पर क्लिक करें

Pdf को अपने मत्रो के साथ शेयर जरुर करें

Date
Page

⇒ तुरही = पीतल की, मुंह छोटा, आकृति-नोकदार, तथा दूसरा मुंह चौड़ा, मुख्यतः दुर्गों व युद्ध स्थलों पर बजाई।

⇒ नागफणी = सर्पाकार नली जैसा, मंदिरों व साधुओं द्वारा बजाया जाता
⇒ मुरला/मुरली = पूंगी का परिष्कृत रूप, लंगा कलाकार बजाते है।

⇒ सुरनाई = ढोली व लंगा जाति द्वारा मांगलिक अवसरों पर। इसके मुख पर खजूर, ताड़ या कैगार वृक्ष का सरकंडा लगाया जाता। जोगी, मांगणियार, ढाढी व नगाड़ची भी बजाते है।

⇒ अवनद्ध या ताल वाद्य ⇐
श्रेणी = चमड़े से मढ़े हुए तालवाद्य कहलाते है।
ताल वाद्य के लिए हमारी ट्रिक ↓
⇒ मृंदमा डैड ने चंधे तक धोखा नहीं ढोल दिया

मृ - मृंदग
द - दमामा (टामक) (टामरु)
मा = मांदल, पाबूजी के माटे, माठ
डै = डैरु,
ड = डफ, डमरू
ने = नौबत, नगाड़ा
चं - चंग, ढफ
धे - घेरा
त - तासा
क - कमर, कुंडी
धौ = धौंसा
खं - खंजरी
ढोल = ढोल, ढोलक, ढाक

Neel Kamal
Date____
Page____

⇒ मृदंग (पखावज) - बीजा, सुपारी, बड़ के तने से बना होता
रावल, भवाई, राबिया जाति नृत्य में काम लेती है

⇒ ढोलक - बीजा, सागवान, शीशम, नीम बड़ वृक्ष के तने का,
ढोलक को, नगारची, सांसी, कंजर, ढाढी, मिरासी, भवाई बजाते हैं

⇒ ढोल - लोहे व लकड़ी के गोल घेरे पर दोनों तरफ चमड़ा मढ़ा होता
गले में डालकर लकड़ी के डंडे से बजाते हैं - यह भी
प्राचीन वाद्य है, मांगलिक वाद्य है।

⇒ नगाड़ा - सुपारी के आकार का नौबत की भांति होता है।
⇒ नौबत - प्रयोग मन्दिरों में या राजा महाराजाओं के महलों
के मुख्य द्वार पर होता था, भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है।

⇒ मांदल - मृदंग की आकृति का मिट्टी से बना लोक वाद्य है।
मोलेला गांव (राजसंमद) में विशेषतः बनाया जाता है!
शिव-पार्वती का वाद्य, भील लोग गौरी नृत्य में बजाते हैं।

⇒ चंग - लकड़ी का बना गोल वाद्य, दाएं हाथ की थाप से
शेखावाटी क्षेत्र में चंग नृत्य के साथ बजाया जाता है।
होली के दिनों में सभी लोग बजाते हैं। दूसरा नाम - डफ

⇒ डैरू - आम की लकड़ी का डमरू का ही बड़ा रूप
भील व गोगाजी के भोपे बजाते हैं,
⇒ डमरू - भगवान शिव का वाद्य, अधिकतर मदारी लोगों के पास
दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है, छोटे रूप को डुग-डुगी कहते हैं

⇒ खंजरी - डप का लघु आकार, आम की लकड़ी से बना होता है
कामड़, बलाई, भील आदि द्वारा। घुमन्तु कबीले भी बजाते हैं

⇒ धौंसा = आम व फारस की लकड़ी, भैंसे की खाल का, दुर्ग व मन्दिरों में बजाया जाता है।

⇒ तासा : मुस्लिम समुदाय द्वारा बजाया जाता है।

⇒ दमामा (टामक) कढ़ाई के आकार का लोहे का बहुत बड़ा नगाड़ा रूप है भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है। मुख्य रूप से युद्ध के वाद्यों के साथ बजाया जाता है।

⇒ घेरा - अष्ट भुजाकार, डफ की तरह एक ओर चमड़ा, फाग व होली के गीत गाते समय बजाते है।

⇒ डफ - बकरे की खाल चढ़ाया जाती है, एक हाथ में डंडा लेकर बजाया जाता है, होली के अवसर पर बजाते है।

⇒ ढाक = डेरू के समान वाद्य, जो उससे कुछ बड़ा गूजर जाति के लोगो द्वारा पैरो पर रखकर बजाया जाता है।

⇒ कुंडी - मिट्टी के छोटे बर्तन के ऊपरी भाग पर खाल मढ़ा जाता है सिरोही के गरासियां व मेवाड़ के जोगियों द्वारा दो छोटी-2 लकड़ी की डंडियो से बजाई जाती है। मांदल व थाली की संगत में

⇒ पाबूजी के माटे = मिट्टी के दो बड़े बर्तनों पर खाल मढ़कर वाद्य बनाया जाता है, दोनो माटों (नर-मादा) को अलग-2 व्यक्ति बजाते है, थोरी व नायक जाति के लोग पाबूजी के पवाड़े गाते है।

⇒ कमर - लोहे की चद्दर को गोल कर चमड़े से मढ़कर बनाया गया वाद्य, अलवर, भरतपुर में, 3-4 व्यक्तियों द्वारा बजाया

⇒ माठ - पाबूजी के पवाड़ो के गायन के समय बजाया जाता है।

Neel Kamal
Date
Page

घन वाद्य

चोट या आघात से स्वर उत्पन्न होते हैं, वे घन कहलाते हैं
ट्रिक ⇒ झालर झाँख के पास घघुघघु चिकम की भरणी थी
झा - झालर, ल - लेजिम, र - रमझोल
झाँ = झाँझ ख - खड़ताल
घ - घण्टा, घु - घुंघरु, घ - घड़ा, घुं - घुरालियो
चि - चिमटा, क - करताल म - मंजीरा
भरणी - भरनी, थी - थाली

⇒ मंजीरा - पीतल व कांसे की मिश्रित धातु का गोलाकार वाद्य, जोड़े से बजाया जाता है, भक्ति कीर्तन एवं कामड जाति महिलाएं इस पर तेरहताली नृत्य करती है

⇒ थाली - कांसे की बनी, चरी नृत्य में प्रयोग प्राय: कालबेलिया, भील, बाहेती बजाते है।

⇒ झाँझ - मंजीरे की बड़ी अनुकृति, शेखावाटी अंचल में कच्छी घोड़ी नृत्य मे बजाया जाता है।

⇒ करताल - दो चौकोर लकड़ी के टुकड़ो के बीच में पीतल की छोटी-2 गोल तश्तरियां लगी होती है। लकड़ी के टुकड़ो को टकराने के साथ मधुरता से झंकृत होती है अंगुलियो एवं अंगूठे में पहनकर बजाया जाता है, वाद्य साधु सन्तो के भजन संगीत मे काम आता है।

⇒ घंटा (घड़ियाल) पीतल या अन्य धातु का गोलाकार वाद्य डोरी से लटकाकर हथौड़े या उसमें लगे हुए डंडे से चोट कर बजाया जाता है, घण्टे का छोटा रूप घंटी होता है। प्राय: मन्दिरो में लगे हुए होते है।

⇒ चिमटा = लोहे की दो पतली पट्टिकाओं से मिलकर बाएं हाथ में पकड़कर दाएं हाथ की अंगुलियो से भजन कीर्तन के समय बजाया जाता है।

⇒ भरनी = मिट्टी के मटके के संकरे मुंह पर कांसे की प्लेट ढंककर दो डंडियो की सहायता से बजाया जाता है। सर्प के काटे हुए का लोकदेवताओं के यहां इलाज करते समय

⇒ झालर - कांसे या ताम्बे की मोटी चक्राकार प्लेट से बना लकड़ी की चोट से, मन्दिरों में सुबह शाम आरती के समय

⇒ घड़ा - मिट्टी का घड़ा, मुंह छोटा होता है, वादक उसे दोनो हाथो में उठाकर फूंक मारता है और हिलाता है। जिससे मधुर संगीत निकलता है।

⇒ घुंघरू = छोटे पीतल या कांसे के गोल वाद्य, नृत्य करते समय इन्हे पैरो में पहने जाते है।

⇒ लेजिम - बांस का धनुषाकार टुकड़ा, ~~पीतल~~ जंजीर में पीतल की छोटी छोटी गोलाकार पतियो, गरासियां नृत्य में बजाते है।

⇒ घुरालियाँ - पाँच छः अंगुल लम्बी बांस की खपच्ची से बना जिसके एक ओर छीलकर मुख पर धागा बांध दिया जाता है। इसे दांते के बीच दबाकर धागे को ढील व तनाव देकर बजाते। कालबेलिया व गरासिया जाति का प्रमुख वाद्य।

⇒ रमझोल - चमड़े की पट्टी पर छोटे-2 घुंघरू सिले होते हैं दोनो पैरो में नृत्य के समय घुरनो से बांधा जाता है। होली पर गैर नृत्य एवं उदयपुर जिले में भील लोग प्रयोग।

⇒ खड़ताल - लकड़ी के छोटे-2 चिकने टुकड़े से बना मांगणियार गायक मुख्यतः प्रयुक्त करते है।

- **Rajasthan Gk PDF- क्लिक करे**
- **Hindi Test Quiz – क्लिक करे**
- **HINDI NOTES - क्लिक करे**
- **RAJASTHAN GK NOTES - क्लिक करे**

- **INDIA GK TOP QUIZ– क्लिक करें**
- **RAJASTHAN GK QUIZ – क्लिक करे**
- **GENERAL SCIENCE– क्लिक करें**
- **HINDI SAMAS VIDEO– क्लिक करे**

GK/GS टॉप 1000 प्रश्न –
Download Now

राजस्थान GK हस्त ल खत नोट्स
DOWNLOAD NOW

भारत सामान्य ज्ञान टेस्ट-शुरू करे

RAJASTHAN GK E-BOOK - DOWNLOAD

RAJASTHAN GK TEST–START NOW